वेन्कतेष अस्तकं

१. वेन्कतेषो, वासुदेव, प्रध्युम्नो, अमिथ विक्रम,
संकर्षणो अनिरुधस्च सेशद्रि पतिरेव च.
२. जनार्धन, पद्मनाभो, वेन्कतचल वसन,
सृष्टि कर्थ, जगन्नाथो, माधवो, भक्था वत्सल.
३. गोविन्दो, गोपथि, कृष्ण, केसवो, गरुड द्वज,
वराहो, वमनस्चैव, नारायण, अधोक्षजा
४. स्रिदर, पुण्डरीकाक्ष, सर्व देव स्थुथो हरि,
श्री नरसिंहो, महा सिंह, सुथ्रकर पुरथन.
५. रमानाथो महि भरथ, भूधर, पुरुशोथाम,
चोल पुत्र प्रिय संथो, ब्रह्मादीनां वर प्रध
६. स्रिनिधि सर्व भूथानां भयकृतः, भय नासन,
श्री रामो रमभद्रस्च भव भन्धैक मोचक.
७. भुथावसो गिरिवास, श्रीनिवास, श्रिया पथि,
अच्युथनन्थ गोविन्दो विष्णुर वेन्कट नायक
८. सर्व देविका सरणं, सर्व देविका दैवथं,
समास्थ देव कवचं, सर्व देव शिकमनि

फल स्रुथि

९. इथिधं कीर्थिथं यस्य विष्णोर अमिथ थेजसा,
त्रिकाल य पदेन नित्यं पापं थस्य न विध्यथे.
१०. अजद्वरे पदेतः घोरे संग्रामे रिपु संकटे,

भूथ सर्प पिसच्धि भयं नस्थि कदाचन.
११. अपुत्रो लभाथे पुथ्रान, निर्धनो धनवान भ्यवेतः,
रोगर्थो मुच्यथे रोगतः, भधो मुच्यथे भन्दणतः.
१२. यद्य अधि इष्तथामं लोके थथात प्रपोनथ्य असंसया,
आइस्वर्यम्, राज संमानं, भुक्थि, मुक्थि फल प्रधं.
१३. विष्णोर लोकैक सोपानं सर्व दुखैक नासनं,
सर्व इस्वर्य प्रधं निर्णां सर्व मंगल कारक,
१४. मायावी परमन्दं थ्यक्थ्थ्व वैकुण्ड मुथामं,
श्र्वमि पुष्कराणि थीरे रामाय सह मोधाथे.
१५. कल्यनद्भुथ गथ्राय, कमिथर्थ प्रधयिने,
स्रिमद वेन्कट नाधय, स्रिनिवसया मङ्गलं.
इथि श्री ब्रह्माण्ड पुराने, ब्रह्म -नारद संवधे, वेन्कट गिरि महात्म्ये,
स्रिमद वेन्कतेष स्तोत्रं संपूर्णं
॥इति स्रिब्रःमन्दपुरणे ब्रःमनरदसंवदे वेन्कतगिरिमत्म्ये
स्रिमद्वेन्कतेसस्तोत्रं संपूर्णं॥